अगम अगाध साध सा गत्यां द घा ॥
हप न रेष सेष न हीकें ही बां भी र
हित बांनि नहीं सेडी आसतन ता प
नहीं समारा ॥ सीत उ अनें रहत नि
नारा । ३॥ कैसी नाते ॥ घा क्या क
घे ॥ आगे इहां न बैरान्य हि घा ॥ व
कैं तेज पुरष प्रकासे ॥ तन तपद ॥ म

अथ श्री हरिचंद सत म थि मृत ॥
ॐ गोबिंद गुर कै तितै स्री मौ न कै
सब साधु ता प्रसाद जस उचरै
हर चंद सत अगाधु ॥१॥ चौपई
अब गति अल ब अनाहद भारी
उपते नव पति महा अभै भारी ॥
तां वन मेव गाव कहा कहियै

जो निलै आसैं ॥४॥ ताकी दष्टि नं
हि येक्तो आइ ॥ ई छ्या सक्ति कहा
वै सो ई ॥ ताइ छ्या सब्द हि न का सी
महत तउ हा आनि अ ता सा ॥५॥
तब ऊवो अहंकार उदा रा ॥ जो सब कौ
नाम कै हैं करतारा ॥ ताकी सक्ति हो

तें मजांनैं॥ विद्यापैके अविद्यामा
नैं॥६॥ प्रमात्मविद्यानितेराजै॥
मैसरावव द्याजीवविराजै॥ सोहै
सुध्यतनहीउनहारै॥ कछुवाप्ता
जगविहारै॥७॥ ताश्रागोईखदी
षरायो॥ जलसाईनाराईणगायो

तातैंतीनिसक्ति बिस्तारी॥रजतम
सतड़ीहिबिधि अनुसारी॥सातें
गबिस्नतरजब्रह्मा कृवा॥स्योतो
मसीतानौं गुनजुवा॥ अहतरंग॥
असेपदहीमाना॥बाहिरछिक
रतजुगताना॥ ८॥तहांपंचौंमि
लिसिष्टिउपाइ॥यौंसंसारकृहोये

स्यारी॥ग्रघनिहिस हुसूस्या
सहिस्यायोतापीछैतिपुतचला
यो॥८॥तेजततसयोतास्यागैस्या
मैस्याड़ी॥जत्यकारेजदीमतहै
साड़ी॥जत्यघथीतातैघटस्वा
घ्यंडश्रीमंडगिनौजिनजूवा॥९॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ननै है॥ [illegible]

[illegible]

[illegible]

ताकौवसमहीश्वराजै॥१३॥ताकौ
वेसितपइकहोइ॥हरचंदनाम
जांनितैसोई॥पुरीअज्योध्यामहि
निवासा॥अमरापुतुतेप्रकासा
॥१४॥जेतासुरतेता॥अमसारा॥
सवही अनिमनमतनुधारा॥स
वहीधर्मरतेअप्रधान कोइ॥

जहीं अध मीकरत नहीं लोइ॥१५॥ प्र
घीन्तोत जाते फलदीइ॥ जीव अरु जंत
माहा सुष सोइ॥ ये के वार वोव तजो
वेती॥ सात वार लुनि येनाफ रदे ती॥१६॥
छवे अम सराजतिके आवै॥ रैति
सुषी कोन संतावै॥ पुत्र समान रैअत
कूं जानै॥ पीता समान रते
यो सही जु वा मद साल्या॥

वतनकोइबात्या॥वडीमाइमगुनीस
मिजोंतै॥त्यरकीकन्यांसुमकरेमांनै॥
आंमथमेथनजीरसंतावै॥दयाधरम
सबकमनभावै॥कदेहीकाकूदेइन
कोइ॥बिनांगुनहकैसैदडेंसोइ॥१५॥
घरिघरिकथासाधहरिपुजा॥तिहि
गांवेऔनदेमनहीदुजा॥मनकूपार
धतदेहीधारी॥स्रातिलसीनपुरी

हसारी॥२०॥राजा सिंघ अभिधान
कोड़ी॥सब ही धर्म नकारी होई॥नृप
ति बाग बड़ो येक लायो॥तरफार फू
लय बरो सगानयो॥२१॥बनतं दन जानौं
उनमाना॥उपमा और गतैं कोनाना॥
फूलैं फर बहुत प्रकारा॥तामें बनी
अगर न्यारा॥२२॥ताके फल
बाड़ी॥साहु बूंद रहै तामाही॥

रतन हरि गुन गावै ॥ सुरौ करे स्नात्वरि
पऊ चावै ॥ २३ ॥ सूर पति आदित हो ना
ज आया ॥ सुरते तासु चैत्याई ॥ को हिस
वाया ॥ बडी सना चारा चरै हो आई ॥ हर
चंद की अस्तुत चलाई ॥ २४ ॥ हरि बंद
बडो सती जग माही ॥ सब कौ देत कर
त नहि नाही ॥ सन तो लुत कं गे सबं ना
यो ॥ ऐक देव सूकर हो आयो ॥ २५ ॥

बिस्वामित्र हो तो उनमाई॥ सत तो न
नजे जौई हिंगं ई ईबेन आऐर च्यां
नलगायो॥ रह्यो अपर छन जानि नपा
द्यो॥ सुर आ इ बिपरीत उमाई॥ ईमस्य
कमारि उयारि गिरा ई॥ बउ जाति स
घनकं कह्यो॥ बागवां न तायें नहीं कह
यो॥२६॥ रैति जाति यती या नाही॥
दसर मो बनमाई॥ चौथो अस

डाल्यौ ॥ नृप आग सौं जाय पुकार्‌यौ
॥२७॥ नृप सुं कहाइ कीकति नबही
सुत रखा गउ घास्यौ सबही ॥ स्तजु ग
नृपसिका रन होती ॥ राजा सोच कीयो
खेंत सोती ॥२८॥ राणी सुनि जोन इव
पांघो ॥ धर्मता हा अधर्म केत आयो
साधू रहत बाग कै माही ॥ बोदे गेर

सबरंभजाई॥२९॥तबराजसबसात
बुलावे॥वडोसीकारसुरयेको आ
यो॥अबराजावीरथ्याजीवमारे॥
स्वारथ आपसीकारवीचारो॥३०॥
हरचैदराये चढ्योतहिगये॥दल
बलबडासुकताई॥हाथ्याजोडद
सुंदसकीनी॥नाएांवेइकसाजे

सुवत्सीनी ॥३१॥ जासम्यंजे नीकसि
जौजाइ ॥ तिहि तामारी कीजिये ॥ मा
ई च हि दिसा हृत्य कारा होइ ॥ नीके
स्यो सुररा ईमधे सोइ ॥३२॥ हौ तौ ता
हा दिषि सो ष्पाइ ॥ निकस्यो तवै जा
न नही पायो ॥ ज्यों ष्पाहि दामनि घ
नासे विचै न ही दिषि इसरै भासे
राजा के तौ जान नही पावै ॥ मो मचे

गयो सो चवऊ आवै ॥ घो डो हा कि
प्रुगितांदीयो ॥ मारि मारि पीछै तै नयो
त्यासौ त्यासुं त्यारैत्त गौयै आयो रिवबं
नमतो बैठे पाये ॥ रि यन्क दियेस रस
गत्या गयो ॥ हसतै उनरे आयेप गत्या
गयो ॥ ३५ ॥ जोरै हलगिराउ चारै ॥ रा
जा अपरो बीनती करै ॥ मम बदनाग
कक अवक्कहूवीजे ॥ मेरो नव

सुवत्यीनी ॥३१॥ जासम्यंजे तीक्ससि
जोजाइ॥ तिहिं तामीरी कीजियै॥ मा
ईचक्षदिसा हत्यकारा होइ॥ नीक
स्यो सुररा ईम छे सोई॥३२॥ हौतौता
हादिषिसो स्याइ॥ निकस्योतबैजा
न्न नही पायो॥ ज्यौं स्याहिं दामनिघ
कासै बिचैन हीदिषि हसरै थ्यासे
राजाकसौ जांत नही पावै॥ मोमद्धे

पावै॥ अनवसतरै आनौ इ मगाउ॥ जलसक
लपपीहै करवायौ॥ कुसकरि लाम ओरक
हु करवायौ॥ जलसकलपपीहै करवायौ
दीनो दान चढ ए। जब आयौ॥ बिप्र कहि पे
नयौ परायौ॥ ३५॥ सब घंन घाम बोल मे आ
यौ॥ अनवसन्तउस जानि सब आयौ॥ ३०॥
राजा तब पयादो ध्यायौ॥ रषीलुर चढि॥ उब
टचलायौ॥ कुमलपरप जार ढीनाइ॥ बूटि
कतुरी रेष वत्योपलाइ॥ नपत चलि पो

तें आवै॥ पुत्र सुत्य गोग्रह गह जावै॥८१॥
बसत रहे इक बन माइ॥ न्रपतु मति ब्याप
त केछु नाही नगारी नकटै पऊ चे जब आइ॥
तबू र जवारा सब रितै न पाइ॥ ८२॥ मत्री औ
सबन कौ ल्यायौ॥ बिपर कहे ऐ मोयै चढायौ
स रजवास कौ पजो कीयौ॥ राजा कहै बचन
यौ॥ बोलहु ल्यो जी वृ तिकहु नाही॥ म
षा सा रि मन माही॥ सो चे सारै रजवा रहौ
ल्या स्यौ बरए उदास नी हारी॥ सुनि सुनि बिप
रह स मन मा ही॥ राजा नटै छा मि हैं म जाइ

च॥नृपकहै यौवनं न्याकौ तुमसा ध्योमम
र्धमहीरावो॥कौनकौनकौ जीजगहांऊ
रोसनकरो बिप्रन लिजाऊं॥५०॥तुमसब
ही के मनकी जांनौं॥सबकौ जीव ये कमति
मांनौं॥अरूषक्कि जीनि जीनितं नजु ना॥श्रा
गपादेनोरावर जांऊं सुतबीनता तेरढं गेत्या
ऊं॥श्रागपादह्डीढीलमते लाये॥तीनत्याब
कोमंनमनावो॥राजा चलिरनवा
सुतरूताम

गहेपग॥५॥ ६ ॥ [illegible]

सुतनतासमत [illegible] नेते [illegible]

मागे [illegible] कपथा [illegible]

दे॥ [illegible]

जैसैं निस [illegible] जो ॥ ६ ॥ [illegible]

के ॥ छार [illegible]

पुजनप [illegible]

स्रमरजसत्वैते॥ढीलकरौजीनघीघररीस
वै॥षो=स्त्रोसरवो रूत्यौं कव=स्त्रा वै॥५१॥
सुतरूतासमुषी=स्नति होई॥तुमबिन=समा
कंपैपहोई॥ चलिमवनतिजेलगीनवा
रा॥सूरसतीसंभिमतधारा॥नांडा मंचितस
तीतबत्याजे॥ चालीजलनंढोलढंमवाजे
पतेवूतसंमकोहै॥सुतरूहितासबिनै

...मसाद॥ २ सो देख...
है॥ ताम्रंतमें ...न को...
तविद्यपश्चायो॥ पुत...
॥३॥ येकांगा...
मांतगी ... वावे ...
मृगतैं घरसारी॥ दीयो...
टारी॥ पद्य॥ ...सी ...तकारे ॥ कोइ

हैरचंदसम दातानही कोइ॥विप्रकहै
बसतरममसबही॥आछे येकबातमैतबही
॥५५॥तापछयेकतिहिकंदीनौं॥टुकटुक
करेतीनूंकरेलीनौं॥जंमगमैंबटपारेतू
टेहि॥तागादसीकछुनही छुटिये॥५६॥
असीभांतिविप्रयेकीया॥कलमऔर
कहांहूबदीया॥कहैनूपमेरोकछुनही
धांमवर्मआयाइीनमांही॥५७॥मोसम

अबैरी नहिकरिमानौं॥ मरौंबोलसा
चैयोजांनौं॥राजामरैंओलैंआवैं॥दिब
तिरासितराबिटीकौंकरज्ञांदैं॥५८॥घो
हुष्टितमोरकरिजानौं॥मोसमानेबांमन
कूमांमौं॥इतैंराजेकूनैंयोनावैं॥
होतबईसोलोकइबमावैं॥६०॥रषी
सुरबोबाचै॥अबरिषकहेदामदे

कैअपनौंबोलहिछिटकावैतोमजो
ऊमतिहृदयमाहौ॥६१॥सुतबनिताबे
चौतंनमोरा॥दोवनपकडिरणीक्षि
तेरौ॥घरामोरिबिचनक्यौनाकही॥
जायवैचोत्रोघरामाहीं॥६२॥राजा
वोवाच॥अवरिमकददामदेनाशी
मालभंडारनहैक्राजाशी॥हेरीवंदै

कत्यासपगाई॥ स्यौप्रसादैसबसिधि
पाई॥६४॥ सिवभगवतजुदिमतिजांनैं॥
सायेवसाधयेककैरिमांनैं॥सायेवजज्या
मुक्तेजोपावै॥सोईगतेसाध्रांसौंपावै॥५५॥
जैजेकांमसूरगतिहोव॥घराफिरिआवै
तजगजोवै॥६६॥येकपुरीकैत्यासहीरई
योइकगतगईउहैयेतआई॥६७॥राजा
वोवाचै॥विस्नुबोलानरिइहोपगवै॥ता

।। हाडे।। मतो
सामन्त दी
दिनदै तु पकड़ी
गा।। ती नौ पद्म
वे मदि न्त्रां के दी था हैं
रन्त्रा दे।।
रतपतैजे
न चला ग्या।। प गांधा

॥सूरज सुरि सब वचन उचारत॥ अधिक तेज का हिन बिस्तारत॥७६॥ तप सीव मै मेर सुर सारा॥ तब रवि तेज जुत्य मबी सतारा परत्न या का ला अग्नि बिसतारी॥ कौमत्य देह अदेक पूर जारी॥७७॥ कौमत कुवर प सौ धुर नारी॥ रांणी तां मुरछा आई॥ त बतलाये हू बोल नही आवे॥ नीर बीना घांणी इस मा है॥ राजा रसौ ता सदी गव

तैं इती जो ममैं नाही मानौं यौ बचनबचित
हि गंई॥ तब नागाती नौंकरिली या॥ उहा
तापडु बेग ए कौंदी या॥ निजपुरित ब्रजि
करि कीयोपीयां नौं॥ त्यो कसकलहाहा
करत्यरत्यां नौं॥ रोजेबिरोगजिपावैंनमां
ही॥ जोरहेसोसबत्यजयेतिगंही॥ ६२॥
कहकौंनकहतानहीआवै॥ क पटै
जोकबिसबसबगावै॥ ताथें अब

करि माही ॥ जो त्रकह्न जहीसु सैंनसमजाइ ॥७०॥
जो सब नग्र चल्यौ हो साथा ॥ गढे की येजो
रि दोउ द्वाथा ॥ अपन अपनै घामसा दा ते ॥ हम
र सेंग काये हूष पाढ़ै ॥७१॥ सो चव घनौं सव
हिनकं क्रुद्धा ॥ राजा सूरमो चलैं जुद्धा ॥ सुरा
तैं न विन दांन न होई ॥ कायेरदांनकरै काई
॥७२॥ आपसनी ओरनसुं कहै ॥ धरमकार
न कोप्र किजिनि रहै ॥ देह विद्धेप मुगप

सी॥ बांमनकहै ढील हकसी॥ अब घा
डामैं आइ रहानी ईन कुमुष्टि के चोवौ
पांनी॥७८॥ जोते समरै अगति सोइ॥ मु
षे जल चोये मरंग सोइ॥ इतनी कहि राजा
कु गियो॥ बांमन तब ही सो बमनकयो॥ ११॥
कंहि जिन्हरी जटी येन की जाइ॥ बिष्ली
येजल पात रमाइ॥ पलं रोता सदी षलायो
पीयो नही जल सी सहत्यायो॥ ८०॥ मात

पीता प्यासे मैं पीवूं ॥ तोकैतै दं तमैंजुग जीउ
रा जोरां नी जाये पी त्योहो ॥ ना पीहुं मेरै ढग
ल्यावौ ॥ ८१ ॥ तव जतत्यै रजा ढ ग की नौं
जत पीवा मेरो रंणा दी नौं ॥ तव नरूप कहै रां ॥
णी कूं पावै ॥ यां ञ्च वत्या जतबी न मुरि
जावै ॥ ८२ ॥ तवही जा येरे णी ढग की नौं
पात्र नरवौ हात मली नौं ॥ रांणी कर्कौं कूं
हा मोये दी जै ॥ पीतप हली पांनी कूं पीजे ॥
॥ ८३ ॥ तात्या वेत्यी वीत ॥ जी रजां न्यौं ॥ वां

ति आये॥ सुरति देखि भक्त सुख पाये॥
पीछै ये कवीनती कीनी॥ मनही मन इच्छा
करे लीनी॥ ८८॥ तेरा दरसन अब हं मन
पाया॥ सोऊ हरि निकटि महा फल आया॥
प्रमार छुवे दैन मति मांनौं॥ भक्ते काम
ना फल जीन जानौं॥ ८९॥ हरि दरसन जि
न गतिहि चाही॥ छूप हिलाव वसा ऊंताहि
तव हि रीछ वर दैन अआयौ॥ नाहिं संगि
मांगह सपायो॥ ९०॥ इनतैं उनरि वचे है आ

गें॥ ताहा बसे सुमरन अंन राग॥ ये है बा
तउ हि गंमन आंनी॥ हरि सौं दास जुदे न हि
जांनी॥२१॥ जन प्रश्रूत बडी हरि लोषे॥
सऊबरत्य ये जु सा घ्र संतो षे सब असतां
न दे ष जब पाया॥ बा सो त्येन गैर कं आया
॥२५॥ नि सा मई रेष की पो कजासा॥ ष्रांम
न क स्रो घ्रास कं चा त्यो॥ बांदे नरो टा न्यां
राकी ना॥ ये क ये क ती नों सरि दी ना॥२६॥

कीयेनिवासिब रैबै साई॥ ज्यौ कौऊ मो लिजा संगि मिहोई॥ सगलौ जनातन मासा जो है॥ ऋसे मंन ठ मो लिलेको है॥ ५३॥ देषौ कं नविपति हु ऋाई॥ ऋसा मो लिविकत है नाई॥ षिप्रहिक है कहा रिन तैरो॥ ऋचि रजहं म हिवऊतइनकेरो॥ ५४॥ दिषैं या हि मोलेलेको हैं॥ माथे भार नारि मन मो है॥ कोमतल के है लनरोटामाथे॥ माता पी

ता पिता दो अगति होय ॥२५॥ येक जा ररा
जा स्त्रि रिती यो ॥ तास मिसती कौन कवि
वी यो ॥ गन का मोलि त्यैन इक आई ॥
सुर ते पाक नारि सुजि धाई ॥२७॥ गति
काउ वा चै ॥ विपुर हि कह्यौ याहि ह्रं त्वे
ह्रं ॥ वामन क ह्यौ त्याव येक लेसूं ॥ ता
रि साथि उमरै करि देसूं ॥२८॥ हू तास
हो वा चै ॥ तब हूहि तास मध्यो मनमा
ही ॥ कौन गैरमाता कहूं लै जाई ॥ ऐसी

राजीढ़िग आयौ॥ अजौं गौरर गारी नहीं पायौ॥९९॥
राजा उवाच॥ अबक मैं बूजत छौं तोही नकैरो
विप्र मांति वादेक मे ते॥१००॥ मीनकौ देवा
दै॥ तवगौ कापि जिवमनके बषान॥
आपसरीको औरजानै॥ मागेनीझप्रसक
तेकोजे॥ नया पुत्र मोयि हिकदीजे॥
कर्रतलेहि नारि सुतकाजे॥ तुनीन
कोविचलते आज॥ देतै परहोइ कहीं
कोगो पुत्र नालिकै ससनछिने दीयो॥

ऐसो पुत्र दे विही जीजे॥ ताकसोट
का हाथं नलीजे॥१०२॥ राजा बोबाबै
न कटीरा कुजाय कहूं नाही ॥ राजा इबे
कस्रो मतमाही॥ वांदर ये कसर मसो
ई॥ छुटो रह चनी ही कोई॥१०३॥ गी
न कानो कतो रेत्वे ग योसब का फूको
अचुमो नयो॥ ऐसी विदि ताहां कोते
गहोई॥ देखे अचन कारसब को॥१०४

दोहा॥ सत सहस अवैता हा॥ बचन सज सिधि होये॥ ध्यानद सहं का धोके॥ मुति न मानौ कोये॥१०५॥ सोरठा॥ धर्म पुष्ठक रि जानिये॥ भिजि राजा हरचंद कह्यौ ध्यां निये है उर आंनि॥ यक बयेक मसनी सत्यो ॥१०६॥ चौपइ॥ यक हीन यास सुनौ नाइ॥ डीन तीगेर कोपसु हिसाइ॥ सील वुटै कौ नम तिछु डावै॥ ईसटै बीचे अतर करवा वै॥१०७॥ सत का दीक बकं रप धारि॥ हरा

रि पाल हिवचनऊचारे॥नगन कहां आ
ताहो माही॥आडी द्वरी जांन दे नाही॥१०८॥
येदरसकूं अतिउकलांनै॥पीहैं गायेजा
हीजांनैं॥रोकी गउज्यूं सीस हलावै॥मन
ही मेंई हांउहा हो इआवै॥दरसन वांचि
अंतारा व अना ये॥कह्यौ अर्द्ध सोई तन
पी॥कथा वे वे जो उच रों कह्यो॥सपूसिकं
चिघा वसव ही॥११०॥ समत र सरवूर
वउतपकी नैं॥ध्यांनस

दीनैं । दति बीस रतीर घके हिम्राधे ॥
छि. छि दतन्यौ सूमरत मन. झौ ॥१११॥
अ्रसतन थैके निसी सु छवनाही ॥ तहांजो ग
ौ लिका. इ त. री । छांतके रत स्वूमनक
ै । तस सुरन ते अकन ले. दि से. जहै ॥११२॥
ज. न छाप. जके वा रिसा लि खुहै अ्रा. मनमो
र रड ने अ्रसतौ ॥ दो. कतन सुमा घरतौ
मेटेलै कजि. रतेहै मनै ॥११३॥ अ्रवलु
काहि दे के बंदन सुन लांबे । सुनि सायनौ

रकह्र पावै॥ तब सुरपति बोल्यौ यऊ बां
नी॥ ऋसी चुक कहा मन ऋानी॥१४॥
सा चुसरापतं मुक्त जीवै पावै॥ ऋगिति
ताव दे घाटन पावै॥ यऊ सुनि बचन रैमा
च्याई॥ रष ऋसतान तांहा चलि ऋाई॥ १४५॥
पग जोतहा परम ऊबी दे ऊन कारा॥ सकु
लसी गार बन्यों ऋंग सारा॥ बी जली ज्यौं
ऋाजउर जाई॥ दम कनि बचन कोमनी
सोई॥ १४६॥ कोमक बैंन बहोतवी देवो

तै॥ मु निन द्विगे नैन नही बोलै॥ तब रंभा
येक नैक बनायो॥ बैल चढी स्पृतन
बदलायो॥११७॥ नितती त्रिसासि तिलक
लिल्याटही॥ सीस जटा अमोतंन घाट हि॥
करिक्तसूल मनौं सिव सोहै॥ बानी जोग
तास मन मोहै॥११८॥ त्योमीलुर तिनुटितहां
आई॥ जोगब चन सुनि अति हुचिपाई
ता पीछैं त्ते येबदन कीनौं॥ सतिसी गारन
उरहस्त लीनौं॥११९॥ छुटिसंमादेमाइक

तीकेरी॥ नारिसरीरकी पाउनफेरी॥
जगी कांमना बचन कहा नौं॥ झेलै मग
परयौ मुनी जांनौं॥१२० छं धीज्यौ ओरहौ
उनहारी॥ पती बात लषी कुमारी॥ कन
कारनी ये कहा कीनौं॥ स्योमहूपदर
छंग गिली यो॥१२१॥ रजाव्रो बाचे॥ यो स
राप नारि जांन्यौं॥ सीस चरन धरि बच
नव षांन्यौं॥ तुमरो वचन अटरनहो

टैर॥मोरठ चारकतसंम,च्यनपरै॥१२७॥
समत रश्रीसुरखोवाच॥देसकनौजराये
हैकोइ॥ता[illegible]केजाये कन्याकुहोइय
श्रीहाजजातेचवाना॥तोकूनवरै गेजा
ना॥सांवैनसुर मरैगे भारीकलकारली
वचनउचारी॥=श्रागंकथानहीवीसता
रैं॥ जगतिवीनासैबेपउचारी॥=श्रागंमु
तीफिरिद्यानहल्यागयो॥जयोसातकोप
हीमतिजागयो॥ जकतकाजिप्रसंगयो

लायोरंन्नाफिरिसुरगाग्रपायो॥२४॥जब
उहिकझ्रोउघ्रारनबतावौ॥तबहीरिष
बोलेगतिपावौ॥त्यौंहरिचंददोषमसि
मांतो॥धरमघटतोकोपद्दीनत्तिजांनौ
बोपनोवाच॥बिषबोजेराजासुन्नारी॥
गुदरीषरेउमरीसारी॥मोलेत्येनतायेकोइ
नहीन्नावे॥कालिजीन्याकहिकायेबतता
वौ॥नकटीकझ्रोनाकबिनकोनी॥
नेचालतीनारिनहीत्वीनी॥

कोछ र खोलै॥ कोकु छे कहै ईन हिउ रै मालै

॥१२८॥ यौ कहु कहै तिहो जाई॥ कहै जी औ

घरि कहा न्हाइ॥ वां मन कहवै वन सुनि

मोरा॥ ईहां मोहि को देत हतेरो॥१२९॥ बैठन

हु टल करी ज्यौं मंजो ऊ॥ करी राज जायेना

ज गांऊ॥ राजा दौवाडै॥ नर पकहै सुनि

वीनती मोरी॥ सकल हौ ये सी हि कोर पाले

री॥१३०॥ वीदर दौवा डै॥ वां मन कीजे

॥ वोल सा टन्हू पनौ छांन दीजे॥ किम चलो

ईनी वं रनैदेहीन्ना री।।३३।नामैदेषैम
नाउनेदं नै।।नम्नो।पा ग्रेविषमां मर्तनाग्रे
ग्रेहृ ध्वनिगैनमन्दे रंनी।नांकुखिपतेन
री क्ष्र मंती।।३४।।क्षिदमानराजामैं
नाम्र ग्रे न्नादीराजा।ग्रैंदामी।।कहैरखी
र्ष्यासेनैं क्रुह्नरा।।धीम नाटका हेन्दृमद
रा।।३५।।राजाश्रेदनैं।दीननमग्नेपदां
ननदाधौ।।बिन्नामी नवेदनन ग्रे।।
मकलराजाषिमृ धा बित धाम।।क्ष्य

है घघर [illegible]

ताघो है और। सञ्ज [illegible]

और एक है म [illegible] ॥म [illegible]

दई मांही॥३०॥ तेनी [illegible]

॥सीसघासवे इते [illegible]

कौन मुनाहै। [illegible]

है॥३५॥ हम [illegible]

पिऐ हम [illegible]

कौ नके लेलेत [illegible]

हरिमन।तिनस।चो।। श्रीमुनरमो
बाडे।। श्रीलसरक।कहद।बो।। हं
दे मेलेनेरेमुतलाते।। मूयमानयानो
यदीव।को।।दें।लिखादेमोहरेजोकें
।।६८।। मं।नमसोलेकेरे जोको।।ता
के।पायनोलोहे।।द।।नदेश क्योमे
रवीको।।नोदे ब्र्यामुकलिपदया
वै।।ह।।तन द्वरिनक लिकरलहको
डीनाकोललघ मोंतालहैमोइ।।बो।।
रक्राजासूमया यो।।मेरज्यो हंनुश्री

थो॥१३१॥पुत्तना रिसंगिजावालेवा उ॰
इ॥डेहला घरे मोले चुकाइ॥ अप्तिसु
सरमा आमघेरुऊ ईन नौंकहा वऊ तकी
नलेऊ॥१३२॥राजा वीबाचे॥मोनस
मलो हा घरे त्यौइ॥तो कहाव मातंको
इ॥तु मई सब्बान जो गिरी घराइ॥मेरी
तुमव ड ञ्जी रि चुकाइ॥साटिमीले सो
बचन करित्तीनी॥ बिसवामित तिव
हदी नी॥बिपरकहे आइ॥योऊ मो पे॥

ई इना समां गत केतो मैं ॥१६५॥ राजा
बोल्या छै ॥ जनी बात राजा के हिया रि
मुतली नता हि वसे गि मन्या रे ॥ बिहून
बिरनं र तनि जारी पाव दो छे मई कों
नाही ॥१६६॥ पुत्र बोल्या छै ॥ मुत कृता
स छै म उ कला छै ॥ पी नाई ये का लो र हो
छै ॥ टल कर त कौं नाही कोई ॥ ईइला
ला स दे ना सि रि मोई ॥ कर म हीन का
हिवं जाई ॥ बुरनी म न ऊदर स ल्या

पांचबरसके युऊगि तिली षी ।। पिता
बीपति ऋपनी दी छिदे षी ।। १६७ ।।
कछु नृपति कीट हल्लन करी ।। ऋब
करता ऋसी गति दीनी ।। देहि हसिस
पति कु छ्वि ऋदेकारी ।। गल बाहो छ्वि
रि रौयी जारी ।। १६८ ।। फटै ही यो मुष
बोलन ऋावृ ।। १६९ ।। राजा बो बा है ।।
कालपाये संगिऊप ज्यो ऋाइ ।।
कोइ कालबी छी हु कराइ ।। येकबा
मा केलदारी ।। दूजा बाहा नृपत ग

तिद्धारी॥१५०॥ माता पिता बिछोह
निभावै॥ रोवूर रायेसमूजावै॥ रहै
पुत्त जिन करो वीषादै॥ माकोट
हैल करै सोइ साद्य॥१५१॥ पुत्तनौ
चै॥ तुमबान कौं नहं सहि घतिपा
॥ कौंन बिदिहूय नकौं टाले॥ का
येकौं जीवकूगमाई॥१५२॥ रानीकौ
वा चै॥ यानी कहर हूसंगातिरै॥ कसै
रहूजागनही मेरे॥ संमदे भाग निह

म्रै॥मैंमद्नाग निपति इ्रषदेषे॥पुरब
पाप=ऋापनालेषे॥१५३॥पितकैसंग
बीपतकुछैनाही॥मांगि=नीषयेकरौ
ररहाई॥राजायेकसोचमनि=मांनै॥
=ऋूबला कामसकतिकरिजांनै॥
१५४॥द्वारेषमोलिटहलकुलीनी॥
गांठिषोलेमायागीनैदीनी॥पांचैब
रष कोबालकमांनैं॥सोसुतटहल
काहीजांन॥देवूदेवकरिकीनाबीछो
वा॥राणीनपनकरररकोमोद्रा॥ ५५॥

बिप्र जाय सुमनें छहिताम॥ कुंवर नं
जनौं कहै नहीं जाये॥ जौ जीव सेद
नैकहि [illegible] दै॥ मंतर मंत॥ बचो
हृष्यो है॥ बिप्र सेग जो मन सरहावे
॥सोम निद्य सदा गति कौ पावै॥१५६
छिप्र कौ बुद्धि सुतारी॥ ताकौ प्र
बदद सी हि हमारी॥ ताम मेंकै कौ
नदना है॥ ताक सबदै में दखि॥ गा
है॥१५७॥ जनौं तक कैंदी सो कौं ना

।ही ॥ न्रप तसती त्वेतहै नाही ॥
छतो राजजीनदी य़ोगी ॥ सो क्यों ते
आरपमांगी ॥ बिस्वामित्र कहै बी
नती य़ो ॥ स्रगति सुसरमा ॥ कागि
दी य़ो ॥ बेचमोतसो बोल बुल्यावै ॥
दी य़ो कीय़ो कहाय़ो आय़ो ॥ १५८ ॥
बज़ेक प्याराजा पआरी ॥ त्वीय़ बो
जसुपरहारी ॥ बिसवामी तरूद्व

बैनकरारैन्रूपऊचारै ॥१५९॥ कोम
कीग्रौप्रदका बैनाई॥ आदी है हैकां
मनकाइ॥मालमोरिसमलोमरिदीजे
॥कनपक्ष अंपनौं राऊलीजि॥१६०॥
राजाबोवां बै॥कहयौनप ब्रीरजैकरि
स्वांमी॥सबदेऊंगो अंतरजांमी॥संक
टपरयौ सरनंजीकेरी॥धंनीरषिहै अ
जीतमेरी॥॥१६१॥कामबगमदेसोइ
आपबीकांमीहुंहैदहोइ॥ सरवस

देतकूसाहानकहावै॥देषोसतऋमचूर
जयेहऋावै॥१६२॥गासद्यालिऋांन
तऋत्रिमानै॥ऋसोकोइकहाकरिजो
मै॥राजाकहैबीनतीमेरी॥हिषरीसतजो
मरेनह्रूतेरी॥१६३॥ऋरजकरीसायेब
सुनेपाइ॥कंपदोकुमनीकस्योऋाइ॥
कांकबेकसंगाहैसारा॥नीलेबरनदेह
उनहारा॥१६४॥बांनीबीकसकयहा
करी॥कंकरिमनऊदेतहैरेरी॥राजा
हिदेषिदूमयाबोल्या॥होंयापुरषति

[illegible] गामे [illegible] वौ [illegible] तवन [illegible] तीडरल [illegible] गो

नमै आवेग [illegible] [illegible] लामाय

[illegible] उत्तहाटि [illegible] वद्ध आइदेहद्येमधारी

[illegible] कासहू [illegible] तद्दे आरी [illegible]

[illegible] तव [illegible]

[illegible] देकमो दे देवै वेद [illegible]

१७। रिमदे नाहै [illegible] नेनेनदस्मा

रिसम मो [illegible] दरिया [illegible] दिलि रिमेटहीला

[illegible] मरमहरमकरिजगडे वोवै।

मुहिमाग्यो क्यूं पावैत मोला ॥१७१॥
कहरि षीसुरबो त्वनदारो ॥ मैदला षेमें
हुदिनपावै ॥ टांकी रहे कि टांकबिका
री ॥ दमरी षटनकनमाइ ॥१७२॥ यो
बिचारजापडा षटहोइ ॥ गरजतहा वि
तगेनतनकोइ ॥ टहेलनषोत ऋसं
षरिऋावे ॥ गली रहेन ॥ कदेनहीपावे
नृपतकह्यातब ईऋानोरी ॥ करिस्यू
टहैलैसक्ति जोमोरी ॥१७३॥ ऊपडावोरा

यै।। मंपड़ौ कहै दं मगा लिवै वौ।। मेटला
प म्क प ना श्रा धै वौ।। किमा रिगवा हमपु
प चऊ पा श्रा लि [illegible] कहै मा [illegible] श्रवपा
यो।। १२ छ।। राजा नोखा बै।। स्रवकहि
प पा छी दे मो हो।। मे रा जो ना वै त्यूं होइ
।। बिपलं हैका रि जै सी। क्ष्तेरौ।। सांन
तवे वेदी यो घालमेलै।। १२५ श्रीपवी
नो परि श्रे हाल्यौ।। सबऊ तो रतटत
नहैन टाल्यौ।। मंपड़ौ दूं मन मघ रत्या

दीनमरहेटमराबो मोई॥ जाडो जोमेट
सबकोइ॥मुहमतिदेषो कमिकरि
त्योज्यो॥तोमानसतुमजालनदीज्यो
झपडावो बाचै॥सेरचंना जोजनहै
तोकोहरिचंदकहैघेनाहैमोको॥
करवागली चाबनत्याग॥ऐकस्रती
तषडोमुषआग॥१२८॥स्रतीतबोबा
दै॥तुषीकहैजोतदंनकेरो॥हरिचं
दकहैराजिकहतेरा॥ चाबत

याखिळिसकल दिना यैस्या यो॥१२॥
रिग्रवोला यै॥ बऊकि क्या हि समद्रै
स्पाइ॥ ता॥ कवर हि [illegible] लो जाइ॥ स
मल [illegible] क हितल॥ [illegible] ज्यो ग्रै॥ क [illegible] सी
मो पाहै जेकं वर पाहै॥ १२०॥ क वसम
है [illegible] जलकै तै स्प्रन्लो मातेव्ह सा के
हो॥ हैलो दै [illegible] मोह्यालै मुतहला स
दासमंत [illegible]॥ १ ॥ उसदे स्पावितत
जेपाताना॥ जौ स्पा कि क स्पायो क्तिलजा

करैं टहैल रिषमदर मांही ॥बालक संग षेल
जांही॥ १८२॥मेवा करि रिष जो गल गावै
॥पातवि दोषेउन हि पुरसावै॥माहा प्रसा
दैसा घघरकेरो॥ जागहोये पावतहू धरो॥
१८३॥संतगुलोम फ्रुनसुरचावै॥देषे जोग
तजि जगतिकुमावै॥ यौ बीनती अमग
पुरि कीजि॥संत चरन कतादम दीजै॥१८४॥
जुगति बाहिर है चरि चेरौ होय प्रसाद
रामजीतेरौ॥ जुग्रि नि कुंफाहि हैकौं अनु
नितगावै॥साथिता होवय-

१८५॥ राजा बोल्यो यै॥ राजा कहै ब्यास सुत
सेती॥ महाप्रसाद उपमा कैसी॥ तब सुक
देव जी गोत सुनाई॥ महाप्रसाद महात
म गाई॥१८६॥ सो प्रसाद सदा जे पावे॥
बिपति कहा मनि मनकी तिक रावै॥ जब
हुतास जा बेलन माही॥ तुलसी पुष्प भेन
होता ही॥१८७॥ बालक संग सुदरयो आवै
जोदी लम थलन रथे हृदं सावै॥ बिन नीर
क पावक सूखनी सी॥ उक्त गन सद्विंद

मनसंकंनंआनी॥रिषवनकरिमीहेरानी
॥१९२॥रेषसुनसंगिसबयेचाले॥कलक
कंसबहीबालि॥आगंचलतअसुन
मयेसुना॥बालककहैचलोफेरिजु
नां॥१९३॥बालकवोबाच॥येकबा
लक जोतिसंकंटकीया॥सुनोपदि
समजवीया॥रिषबालकंकारिजिन
कोइी॥पटेमुएंअसीगतिहोइी॥नौं

ई॥१८८॥बरीयाहोइ मातनब जानैं।सुत
हीदीखि सातत्य म।नि-आनें॥पिलकोध्या
नसदामनमाही॥पतिनृगादीजदेहना
ही॥१८९॥बरागीगुरकों-अरादेपतिव्रता
असेव्रतसादें॥करमबीसात कसोटी
आइ॥सोमैं-अबहीहूंसमजाइ॥१९०॥
रिषबोबाचै॥आजेबबडी घबीदीन
आवै॥पूजाहोयपोपजो-आवै॥हूतासवी
बाचं॥तबसलांमकरीहूतास॥कोपपरीबच
नवकास॥१९१॥कुमरेबचनकहानही

पसबाये़क संम जनसारा॥ तिन कह्मा-अेसे
कारा॥ करतार ची मेटी नहीं जाई॥ मनकी
सेक गिर्‌से ते हित्यागे॥ होत बहसे बिदा
ताऱ्आ गं॥ चालिहूतासऱ्अपुटाफेरी॥ होत
गुलांम ऱ्अमुबकीसकरी॥ १९७॥ वरको
धनीकरसोइ छाजे॥ तुम दूरि जावाकि
रोन हीऱ्आजे॥ बांदोकहा मोलिको। ली
ये॥ धनीका जिमतसकनहीं दीये॥
१९८॥ रावल कदोबा चे॥ तबसा८

ही ॥१८८॥ बरीयाहोइ मातनव जांनैं ।सुत
हीदीषिसीतत्व मानिआनैं ॥ दिलकौंध्यां
नसदामनमाही ॥ पतिव्रतादी जदेहना
ही ॥१८९॥ बरागामृतकौं अरादै पतिव्रत
अमैश्रुतसार्दै ॥ करमवीसातकमोटी
आइ ॥ सोमैं अवही क्रमसमजाई ॥१९०॥
रिमरोवाचै ॥ आजैवबडी मुवीदीन
आवै ॥ दुजाहोय पापजो आवै ॥ कृतामरी
बाच ॥ लवमलांमकरीकृतासा ॥ कौवपरीवच
नवकासा ॥१९१॥ कुमरेवचनकहानही

पसबाये क संम जत ॥तिन कहे ॥
कारा॥ करतार की ॥ हीं जाई॥
संक गिरू सेते हि ॥ होतव्ह सा॥
ता ऋागं॥ बाति ऋपुटा फरी॥
गुलाम ऋसुवक करी॥१४७॥
धनी कर सोइ है ॥ तुम छाि जा
रोत ही ऋजे॥ बादो कहा मो
यौ॥ धनी का मतल कर दि
१४८॥ बालक है

सीम निन्द्रा॥ हमल्ह हितासलाइहं नाही॥ गय
तहां वंनमञ्झ वयारै॥ मोपसमवकों विच
रिसारे॥२००॥ चल्यो कूबपक्तासञ्ज केलो॥
होत मोपहाथ नहां मेल्यो॥ सरपयकतरहेर
पहोइ॥ तिहं सो डस्यो पस्यो व हिसोइ॥ यक
सरप डस्यो रूदरतौं परयो॥ छुट्यो हाथ डाल
वहिगी ल्यो॥ सगले बालक मीलि नहां आ
यौ॥ गीरितास कुं निगतेपाये॥२०१॥ बा
लकोबाच॥ कूहसीमसकच मिसुरे वै॥
वीलकुतासञ्ज केला होहै॥ याकै पीडबो

लनहीआवे॥पतिहत्न सतवा समझावे॥
२०२॥कातसरपड्स्योतंन मेरो॥होतिवज्र
सोजीवइहीकेरो॥त्यागीचोटमोरतनजा
री॥पस्योहरितेगरदमजारी॥२०३॥रुताम
वोबाच॥मतिरोवोहरिनामकाचारो॥योे
भ्रोसरतुमरोहिहैयारो॥अबनतुसरमासोंया
कधे॥अबतुमत्याजहंमारीबये॥२०४॥
दीनामातकामेनहीआयो॥हरतपरिति
सरिरहोसनायो॥अबआगंपतिमतुर
जांनै॥इहारह्योसिरचत्यो पीरांन॥२०५॥

अहमेरमन कीहलमी॥ औरहिजन्मक
ही मरदेसी॥ अहमेरा बंदन यौक हियौ॥
अहता सउहांई रहियौ॥२०६॥ मोरि हुतो
मातपगपरीयौ॥तुमइ तनीसाव हितक
रियौ॥ कहयौ मुख होतिव याह्वौ॥सु
तहतासपस्यौ वनमुनौ॥२०७॥ कालमी
परिमाढो है नाइ॥ होति असो मुवोवन
आइ॥ अगति सुसरमा पंबिमवकेरो॥
हीडो मतिह्यकोउसकेरो॥२०८॥ मोरिमर
नकोसोचनकोइ॥ मातामोरिवमोहम

होइ॥ मो बिन माता कहे नही मानी॥ इया
लौ रोरही रूक्तानी॥२०९॥ पाता मोरे रवजोन
इ ष पावे॥ रूम द्व रि नि स नी रसरावे॥ कहे
कहा बलेचत्यन कोइ॥ अबे इहा अमीबे
घि होइ २०१०॥ आव मी ल्याप है ही कीयो॥
हेमते प्रद इ वी द्वो वादी यो॥ तुमरि संगे महा
सुषपायो॥ अबकरों अंत ही आयो॥ २११॥
इता बचन रूतासत चारा॥ द्वाती कुटपरयो
धरि मारा॥ ज्यूं रूतासति सब रू..

च्यांरे जांन्यां ये मुन्ना ॥२१२॥ तब रांम कहूं तास
उचारे ॥ जीवन नहीं मरन मनि धारे ॥ सब त्या
क निज बस वत समारी ॥ नकारिल मिनेम
कुन्नारी ॥ तुम बिन कैसै घरि जाही ॥ ये कहू
तासै बनत है नारि ॥ कहू तासु सुनौ हो नाइ
हारहो मते रांम कहू हौ इ ॥ मेतन भरि-भ्रसा क
हिला नी ॥ तब सब हि नन क मादी नी ॥ करी
प्रनाम डिगरि घरि चालि ॥ देखो दइ कौन घ
रघाल्ये ॥ इनकी मायै नु जितब पावै ॥
बीनमरा सर पंच त्रिये सारि ॥ नौरांनी

कहिकै कहासो नपैह आवै॥ऊत्री पंथने
हारे॥२१३॥रानी वोबाच॥सबलाल कदेखा
वहनाही॥रानीसो चककयो मनमाही॥ज्यौं
वोपैं कहतो दिग आवै॥ज्यौं तु नास अगोको
ही आवै॥२१७॥सो अब नही दई कहा की
यो॥अवर सास रानी जब लीयो॥तक धार
नां मुखतन कैरी॥दई कहा बोल हिगटेरी॥
२१८॥बालकवोबाच॥बालकनिकटे
समटि सब हुवा॥रोये कयो है
मुवा॥रानी नही बोलन पाई॥

च्यांरे जांन्यां ये मुत्रा ॥२१२॥ तब रांम कहू तास उचारे॥ जीवन नहीं मरन मनि धारे॥ सब त्या क निज बस करत समारी॥ नकारि नि नेम कुमारी॥ तुम बिन कसे धरि जाहीं॥ ये कहू तासे बन नहे नारि॥ कहू तासु सुनों हो नाइ हारहो मते रांम कहू हो॥ नेन नरि-भ्रमा कलीनी॥ तब सब हि नन कमादीनी॥ करी त्रनाम डिग रि धुरि चालि॥ देबो दरी कोन धरि घाले॥ इन की माये बुजि तब पावे॥ नोरांनी नम गिस रप चलिये मारि॥

कहिकैं कहो सो देषैह आवै॥ ऊनो पंथ ते
हारे ॥२१३॥ रांनी वोवाच ॥ सब बालक के देष
वहनाही ॥ रांनी सो वच कयौ मन माई ॥ जै
वो पैं कहै तो दिष्ट आवै ॥ ज्यौं के ताम आगे
ही ध्यावै ॥२१७॥ सो अब नहीं दई कहो कें
यौ ॥ अंधर सांस रांनी जब त्यौ यौ ॥ ते कै ह
तां मुष उन केरी ॥ दई कहो बोलि टिगटे
२१८॥ बालक वो वाच ॥ बालक ति कै
संमटि सब हुवा ॥ ते ये कें कैं
मुवा ॥ रांनी नही बोलत न पा

मुद्रा आई॥२१९॥ बैत बिवोग कहना
ही॥ घोड़ो मुख चढ्यो इ सगाई॥ महा बिवोग
कहो न हो आवै॥ ती दर बैत बोल न ही
आवै॥२२०॥ दोहा बिरह बचन न ल्यायो मउरि
धरि परि परी गीधाये॥ मरद न करि बाल
कहै॥ सो बदो न होये माये॥२२१॥ रांनवा बा
त बोली रिस सुतन सों॥ मूरख तन बैन उ
चारे॥ केहा कियो कैसे मुवो॥ वीर कहो वि
चारै॥२२२॥ बालक बोलै॥ नल बोले बा

लकेसकलूसीरेपालकगयौ करि=आइ॥२२
उवैदरषततैंगीस्यौ॥ तुमेपस्यौ सुनिमाइ॥
२२३॥ जोहूवासक्क्रशहोती॥ याते विगतव्यौ
हार॥ पीछैंवंदनसकलकरि॥ मारिगत्यागे
बार॥२२४॥ बालवोबात्र॥ फिरिवालयेक
गुदे=आइ॥ वऊरिवातकहीसवाइ॥ सुतहूता
समातयोत्रावी॥ बालकसकसाथिहसायी॥
२२५॥ रिषसेतीप्रनामकराइ॥ तुमस्तुवचनक
सासुनेमाइ॥ रिषकीरहत्यद्वौके। जिनमाइ॥
तपतंभ्रारेजोवृचनउचारी॥ तिहमकसौ

समजेत्यो सारे ॥उठि चली माता वनडोरी ॥ चली चली यो चीति हिगेरी ॥२२५॥ रोनी वोवाच ॥सुत हूतास पस्यो तहां पायो ॥त्यो गोदे मवीलन्हु त्यायो ॥ वोत्यो पुत्रु कहां मयो तो ई ॥ गहरनाहिं केंछ वमोई ॥ २२७॥ सव सुख गयो घरिवंदि आई ॥ दीन नाथ चल्यो तजि माई ॥ परे गोदि मसोस हत्यायो ॥ माता नवाहिं केरसुत्ला यो ॥२२८॥ हूतास वोवाच ॥ तव हूतास वात पेभाषी ॥ माता दई ऋ के लीराषी ॥ मपापी क कुटहल

नकीनीकरता आनि असी गति करी॥२२९॥
चल्यो और कछु कहन न पायौ॥ राम कहत ऊ
चकी संग घायौ॥ मरति कन्त यौ मात बन्न
लावै॥ इजो कूल संगि सहरावै॥२३०॥ रानी वो
बाचै॥ बिन अबला मरे तिक सुत पासै॥ रिब
कसी दोऊ गये नासे॥ सो चये ऊ चे मति आवै॥
सुत जो दाग मोर करि पावै॥२३२॥ ऊ चै वै नही
बोहो तह ठकीयो॥ दोऊ हा घडा रि नी
यो॥ मतेक बोज है नारी॥
लीये नारी॥२३३॥ देवदे

समजेत्यो सारे॥उठि चली मातावनढोरी॥
चली चली यो चीतिहिगेरी॥२२६॥रानी
वोवाच॥सुतहूतासपस्यो तहांपायो॥त्या
योगोदेमबोलनुत्यायो॥बोल्यो पुत्रकहां
भयोतोही॥गहरनाहिकेरुवमोही॥
२२७॥सबसुनगयोग्ररिबंदिआई॥दीनअ
नाथ चल्यौ तजिमाई॥परेगोदिमसीसह
त्यायौ॥मातानवहिकैगसूंलायो॥२२८॥
हूतासवौवाच॥तबहूतासवातयेभाषी॥
मातादईअकैलीराषी॥मपापीकहुटहल

नकीनीकर [illegible]
चल्यो श्रीरं [illegible]
चक्रीलेना [illegible]
लावे॥३जो [illegible]
बाचे॥दिन [illegible]
कसीदोकनावेत [illegible]
सुतजोदागनेरवे [illegible]
बोहोतहवक्री [illegible]
यो॥मैतेकवोज हैजारी॥ [illegible]
लीयेनारी॥२३॥ [illegible]

या इह सकूल नहीं सोगा यो॥ वूझत खिदो गक
है कोताकौ॥ ऐसो कमेर हियो है काकौ॥२३८
मरहे टेहसोत रीहनहीं॥ पैंसहरनांहि॥ नि
हि गांही॥ अथ मेछ माहा इ थे पांवै॥ अमोकह
कहूकहै तन आवै॥२३५॥ सुनी लकुटक
ग्रमरदकेरी॥ बलदरयु नित्याई हेरी॥ प
नीहोकरी मछ मांही॥ मरद्ध रिपाइ तिसगं
ही॥२३६॥ कूसवानि जवला खोदी यो॥ श्रा
लै जलतब तोत इ सुका यो॥ मेछ माहिं बाल
तजा आनी॥ अह सूयेक बस तरत न होइ॥

नगतमरतसो चुयो आवै ।। सोइ सो चनाति
नरि पा ढै जैकहै पावै जैकोइ कहै साधक्र
मुखा ।। कारज सिन्यं कारन है जुवा ।। २५२ ।।
कारन साध मुखा को नाही ।। कारिज सिनं
कारन है जुवा ।। कारज देहम्रव है ताही ।। दे
ही चस्या मुकति है आवै ।। सो तंनगयो ।।
सो चमति आवै ।। २५३ ।। नातै सो व उचितही
होइ ।। मृतरू तासनगत होसो इ ।। नवीं नाडे
मा यो तैं हिवारा ।। रोनी कहै दै से ब्यो हारा ।।
२५४ ।। रांनी वो व च ।। व स्तर येक इसरो नही

बामबा[illegible]जदेततबूया [illegible]
सुनांड़ा॥ भाडा[illegible]नं [illegible]
मतरये केदेजनां [illegible]
बांजं॥२धद॥राजा [illegible] प [illegible]
डि[illegible]दै मोही॥ [illegible] वा॥
२ध७॥ फा डि वी [illegible] औ [illegible]
होकरततनकी [illegible] श्री [illegible]
यौहोतबदवौ [illegible] घा [illegible]
डौलैराजा जी [illegible] स्यो॥ [illegible]
जबरिघकलौबे [illegible] रिघ [illegible]

परी अस्तै रेडी ॥ २४८ ॥ रानी दौबा च ॥ सुतस्ता
समस्त है की यो ॥ न्या गीबार दा गमैदी यो ॥ बात
कहते हैं सो ड़ी ॥ ते सब कही बि म्रहम होड़ा ॥ २
४९ ॥ सेवक गब मै होतो सुत तेरो ॥ कारेजस
कल कारत ल्लो मेरो ॥ धरम दा देस धान मझे होइ
दार थ द्यो संप जो मति कोड़ी ॥ २५० ॥ रानीतब
छे र है लौती ना ॥ करम बी सात और ड्सदी
ना ॥ का सरूप हो तो येक और ॥ बत्ती वको
सती न त्वै गौरा ॥ २५१ ॥ रानी ह्वां पै हारक ते
मारा ॥ पत्यौ पी ल म्रझे मं धारा ॥ सो सरयासे

पुगी गुजरों दितमलाइ॥ रिषदेव कछु आम
नदीनी॥ दादि चोर देत जो कोइ॥ ताके संग
चोर ही होइ॥ जाय राय पले गुजरांनी॥ हार मु
स्यो काहि गै बांनी॥ या कर कोजि और हें मम
रा॥ कुंमीरां म मुस्यो क्यूं हारा॥ २५२॥ राजो वो
वाच॥ सुरतै पाक असो तें न पायो॥ का हिम
न चोरी मत्ता यो॥ संग लिसा दल गी न कोइ
हिय आ प्रमतै टल करा ही॥ २५३॥ रांनी वो
वाच॥ तब या के हैव वन पे कमानी॥ औ



बखोत मार करते सं मि धावै ॥ बखोत लोक
महरटलौं आवै ॥२६२॥ राजोवाच ॥ [illegible]
मरहटको सूबदारी ॥ सो क्यौं नखोत दे खिनी
जनारी ॥ याकौं ये मारत कछु ल्यायौ कहा गु
कहा मुस्यौ परायौ ॥२६३॥ याहा तो माह
व धाजीरी ॥ सुत के मुये जिसटम लिधारी
या अबला कुं काये मारी ॥ कहा नयौ हमसु
उचारौ ॥२६४॥ हरीदारवोवाच ॥ सवा कोडि
कौ हार हीरा लौ ॥ याके गल पायौ ॥

राजाकहीतो।रि
हाहेमारो॥२६५॥
नेहीमान्योतुमारो
हारौ॥व्हरनु
मुस्यांकेतेदीत
कडीकांतेश्रो
येराडी॥करमवी
योरानीराजायेग
मारतजवरत्वीद्यो

खवोत मार करते संमिघावै॥ खवोतलोक महररटलौं आवे॥२६२॥ राजावोवाच॥ योऊ मरहटकी हू खवारी॥ सो क्यौं नवोतदे विनी जनारी॥ या कौं येमारत कछुल्याचौ कहा गु न कहा मुस्यौ परायो॥२६३॥ याहा तो माहा सुख पाचारी॥ सुत के मुये जिसट मति घारी॥ या अबला कुं काये मारी॥ कहा नयौ हंम सु उचारौ॥२६४॥ हरीदास वोवाच॥ सवा कौ डि कौ हार हीरा कौ॥ या कगलहीं बनपायौ॥

राजाकह्यौतौरिइहिमारौ॥हममसकीनक
हाहैसारौ॥२६५॥राजावौबाच॥पुत्रसोग
नेहीमान्यौतुमारौ॥राजाकह्यौत्यौसत
हारौ॥वरनु म्यौ ह्तासमरिजै॥तोहार
मुस्यांकेतेदीनजीजै॥२६६॥रांनीवौबच॥
कशीकांते=श्रीरनजनाइ॥रांनीकेहीबंती
येराइ॥करमबीमाति होयसब=श्रावै॥
यौरांनीराजायेगुजरावै॥२६७॥क्रामिमड़ग
मारनजबतीयौ॥बोयनोहि

याकैहाथिषड्गयेदीजे॥येमारमेरीगति
कीजे॥२६८॥रानीवैबाचै॥मनमैंकहमि
रतिये=आइ॥पीतकैहाथिजुमरनलाइ॥
लोककहैतेरीकौहालागै॥तेरहाथिथांन
येहत्याग॥२६९॥राजावोबाच॥हरिचंदक
हसुनौरेनाइ॥याजीव=असीहौ=आइ॥वोह
तलोकदेषांडर=आवै॥मेरहाथिमीचमंतला
वै२७०॥राजाहाथिषड्गजवलीये॥तीनो
लोककपांनिलोइ॥सबब्रह्मंडसबदसुना
हैहैकारदेवजयिजुवा२७१॥जुवानोगलो

कैमहोइ॥ जुवामनि अर्कदेवा [illegible] ई ॥२८१॥

बाहैनत्यागयो जबही॥ ब्रह्माबिस्नु [illegible]

तबही॥२८२॥ महादेवोबो [illegible] महादेव [illegible]

पनहीबोल्या॥ सबदेवातें [illegible]

सहामीतूंश्रीतारहंमार [illegible] जेदे [illegible] ॥

येनीहारा॥२८३॥ अग्निसुरमाश्री [illegible]

यो॥ सुकररूपसरातनकीयो॥ ब [illegible] ता

तधारितनआयो॥२८४॥ का [illegible]

बदीयो॥ सबदेवामील्लेस्रातन [illegible]

गनिकारूपसकतिहसोइ॥ तोसत [illegible] ॥८

लि षीसाइ॥२८५॥जीतैनैकह्नदरसतोपाये
॥देवासवजांनिसवाये॥घकेउनजंनमरम
रनते॥तुमवादरसावैतोदरसनते॥२८६॥
व ढिवावां णादेवता=ग्राये॥तेजोमयेसरीर
वाये॥पुपंहपड्डिष्टि=ग्ररजैजैहोइ॥येहघ
नह्नलोकेन हिगोइ॥२८६॥सपतकोड्ड
तैंकीनौंकल्यांण॥तोसंतिरहतेहंमजांनि
॥गंगामध्यिह्नतासवहायो॥उलटोतीरतद्रिष्टि
सो=ग्रायो॥२८७॥राजापरागणमकराइ॥
मातामिलीसीतलता=ग्राइ॥=ग्रगनिदहातैं

कंचन काटै ॥ सुत हृता सरूपतनराटै ॥ २८४ ॥ देवतावोवाच ॥ धूपदीप आरती संजोई ॥ सुरपति सतकर है सोई ॥ बहोमती सारै ॥ तेरे का जि आ देतन धारै ॥ राजावोवाच ॥ तबहरिचंद कहै बिचित्र असी ॥ मांगन केरि वो सनाक मी ॥ २८५ ॥ देवतावोवाचै ॥ धूपदीप आरती संजोई ॥ सुरपति सहित कर है सोई ॥ बमो सतीसा रिज गामांही ॥ ताऊपर रति हूसरानांही ॥ मागि मांगि बोले सुरसारि ॥ तेरे काजि आ घेतंन धारि ॥ राजावोवाच ॥ तबहर चंद कहै बीचित्र

सा॥ मांतकेरीबासनाकसी॥२८९॥देवतावोवाच॥तबसुरकहैकछु तोलीजि॥पाछैदोसहमनहीदीजि॥राजावोवांच॥तबहरचंदकहैबरयेह॥असोकहैकोउजीनदे॥२९०॥देवदेसमुनिविष्रमहेसा॥ऐसोयोहोउबरअसा॥तीहूलोकतेरीजैहोइयो हरसोइ॥२९२॥आपनसोंअंतरिषराताहसोइ॥२९२॥आपनसोंअं॥अंतरिषरातेहसोइ॥२९२॥आपनसोअं

पजसाउ ह्र करि लीया॥तारा ति सी लीन हो
काइ॥पतिव्रता कं मास मगाइ॥सुतसुता
ससमा कौनाही॥फिरि दुटौं लैं हैं मैंनमाही
२९४॥तिह्रंन मीत्रिपुरनवूपायौ॥जगतिदं
तमैं दांनसब आयौ॥करम मपवनही जग
तिजगावै॥सातिग करम हो येनही आवै॥
२९५॥करम कर फल आसंत कोइ॥अरिआ
पै देव छोटकाइ॥ममेरी करितुनमानैं॥फ
लबासनां वीजनही आंनैं॥अतिह
नही जांन॥हरिउपदेस करमन

हौं आवै॥ निरमल कौ राज करावै॥ मैं त्या गौ
और कौं दीजै॥ दीयौ राज कहा फिरि लीजै॥
३..१॥ विस्वामी त्रैवोवाच॥ तब रिष हूता
सही सेम जावै॥ पुत्र राज अज्यौ च्यापावै॥
उतर॥ उहै बात हूता सब मांनी॥ मेरी सौ टरै
मति श्रांनी॥ ३..२॥ रीषवोवाच॥ देउं सराप
राजन ही लेवो॥ रायै कह्यौ कीर पाकरि दे
वो॥ पिता सीम रिष आग्या मानी॥ अज्यौ
धा राज कीयौ उनि मांनी॥ ३..३॥ हूतास

बी॰ ... ५॥ कायौ राज नहीमन भायौ। तब
वहीगढ़ हुतासबसायौ॥ पाछै अमर भयौ हम
ई॥ भागब मैतो दरसन होई॥ ३००४॥ ध्यो
नदासो॥ उहीदेहै हरचंद सीदस्रवा॥ मति
जानौ ऊनमकौ मुवा। मजेनानदीयो सो
धिपाई॥ सदापावै ऊपार मांगी॥ ३००८ को
छैमेबमतीमनि भ्रानी॥ सोहरचंद तने
करिमानै॥ मेबछोरिके छुने गतिनहोई
तनमभगति जानति सोई॥ ३...

श्रोगनकौं देहै धराइ॥सबको श्रोगनलेत
जाइ॥श्रीसुषबोलीयाबांनी॥श्रोगनका
है तिनके श्रांनी॥३००७॥तोमेरीकहीकुन
चलावै॥घटिबदिकछुबोलन श्रावै॥
जेकोइकहनजानैसोइ॥तोक्यौंउचित
करनकौंहोइ॥३००८॥तोमकहासुनतु
म श्रांनी॥सोसब्दोबचनतोतरीबानी॥
पुरेश्रोगननाहनश्रांनै॥ऊरैमरैमकहा

कोऊ जांनै ॥३००९॥ घटि बुद्धि सो मेरी मति मारी ॥ उन कौ औगुन कौ मन धारी ॥ उन की गति वै ही पै जांनैं ॥ मन बनु द्धि मति कौ पहि चांनैं ॥३१००॥ दोहा ॥ उदै विदो ति करि दीजे यै ॥ लेषन चार प्रगार ॥ भ्यां नेदास सब की मुद्धा लीयै ॥ जगा तेत्र गा ति प्रपार ॥३००११॥ लीषन का जिसु रसती लगै ॥ सब पंमत कलि माहि ॥ रांम संमान नलीषस कै ॥ हरि चर चाम तिनाहि ॥

३००१२॥ हरिचंदसतबखांनिकरि॥ की
यो नगातिरससार॥ जोग्रांनीसरवैएकि
रै॥ सोसबउतरपारै॥३००१३॥ इतीस्री
हरिचंदसतग्रंथसपुरणसमापातै॥ ली
षतैं लीषीकहरकैरवावै सो दिवी वारि
सो जन या पोथी पढै सौ जीन उतर पार
पोथी लाल्यास्योनाथकी लीषैंतीसुक
संमदाइ पंथीकी सरन्प्रलवर संमत्संम
स चाहोतरैका॥१८७४॥॥ रांमरांम रांमरांम राम